B.A I

भारतीय दर्शन (Subsidiary) [redacted]

चार्वाक का प्रमाण विज्ञान

चार्वाक का सम्पूर्ण दर्शन उसके प्रमाण-विज्ञान पर आधारित है। ज्ञान के साधन की व्याख्या करना प्रमाण-विज्ञान का मुख्य उद्देश्य है। भारतीय विचारधारा में अध्यात्मवाद के अतिरिक्त जड़वाद भी देखने को मिलता है। चार्वाक एक जड़वादी दर्शन है। जड़वाद उस दार्शनिक सिद्धान्त का नाम है। जिसके अनुसार भूत ही परम सत्ता है जिसमें चैतन्य तथा मन का अभाव होता है। भारतीय दर्शन में एक मात्र चार्वाक जड़वादी दार्शनिक है।

सही ज्ञान को प्रमा कहते हैं और ज्ञान के विषय को प्रमेय तथा ज्ञान के साधन को प्रमाण कहा जाता है। चार्वाक दर्शन के अनुसार यथार्थ ज्ञान की प्राप्ति प्रत्यक्ष से ही सम्भव है। चार्वाक प्रत्यक्ष को ही एक मात्र ज्ञान का साधन के रूप में मानते हैं। इसलिए दर्शन की मुख्य उक्ति है :- प्रत्यक्षमेव प्रमाणम्।

भारतीय दर्शन में ज्ञान के साधन के रूप में (1) प्रत्यक्ष, (2) अनुमान (3) शब्द (4) उपमान प्रमाण है।

चार्वाक ही एक ऐसा दार्शनिक है जो सिर्फ प्रत्यक्ष को प्रमाण के रूप में मानता है। प्रत्यक्ष का अर्थ होता है जो आँखों के सामने है। अर्थात प्रत्यक्ष वह

मूल्यांकन करने पर अनुमान अनुमान गलत हो जाते हैं। अनुमान में भूल और असत्य होने की सम्भावना बनी रहती है।

चार्वाक शब्द प्रमाण का भी खण्डन करता है। शब्द के सम्बन्ध में कहा गया है कि आप्तोपदेश: शब्द: - जिसका अर्थ है आप्त पुरुष के उपदेश को शब्द कहना चाहिए आप्त पुरुष उसे कहा जाता है जिसका वचन विश्वसनीय हो। वेद, पुराण, गीता में कही हुई बातें आप्त पुरुष की है लेकिन चार्वाक शब्द को ज्ञान का साधन नहीं मानता है क्योंकि शब्द ज्ञान के लिए आप्त पुरुष का मिलना आवश्यक है आप्त पुरुष को मिलने में कठिनाई है यदि आप्त पुरुष मिल भी जाये तो हम कैसे विश्वास करें कि यह आप्त पुरुष है

चार्वाक दर्शन उपमान प्रमाण का भी खण्डन करता है क्योंकि उपमा द्वारा प्राप्त ज्ञान अधूरा होता है इस लिए प्रत्यक्ष ही एक मात्र ज्ञान का साधन है

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(1) चार्वाक को कहा गया है (i) आस्तिक दर्शन (ii) नास्तिक दर्शन (iii) आध्यात्मिक (iv) इनमें से कोई नहीं

(2) चार्वाक ज्ञान के साधन के रूप में मानते हैं (i) एक प्रमाण (ii) तीन, पांच (iv) इन में से कोई नहीं

(3) देहात्मवाद का सिद्धान्त संबंधित है — (i) चार्वाक दर्शन से (ii) बौद्ध दर्शन (iii) जैन दर्शन (iv) इनमें से कोई नहीं

(4) ~~चार्वाक~~ चार्वाक दर्शन परम पुरुषार्थ को माना है (i) धर्म (ii) अर्थ (iii) अर्थ और काम (iv) मोक्ष

ज्ञान कहलाता है जो इन्द्रियों से प्राप्त हो। इसके पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ है - आँख, नाक, कान, जीभ और त्वचा। इन सभी ज्ञानेन्द्रियों से जो ज्ञान प्राप्त होता है उसे प्रत्यक्ष कहा जाता है। आँख से रूप का, कान से शब्द का, जीभ से स्वाद का, नाक से गन्ध का, और त्वचा से स्पर्श का ज्ञान प्राप्त होता है

जैन दर्शन और सांख्य दर्शन में ज्ञान का साधन प्रत्यक्ष, अनुमान और शब्द है वैशेषिक दर्शन में प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द तथा उपमान को माना है चार्वाक दर्शन ज्ञान के साधन के रूप में एक मात्र प्रत्यक्ष को मानने के कारण अन्य प्रमाणों का खण्डन करता है। चार्वाक अनुमान शब्द का खण्डन करता है क्योंकि अनुमान अप्रमाणित है। अनुमान में प्रत्यक्ष के आधार पर अप्रत्यक्ष का ज्ञान होता है आकाश में बादल को देखकर वर्षा का अनुमान किया जाता है। पहाड़ पर धुआँ को देखकर आग का अनुमान किया जाता है बाद में प्राप्त ज्ञान को अनुमान कहा जाता है

चार्वाक दर्शन अनुमान को मान्यता नहीं प्रदान किया जा सकता है क्योंकि व्यावहारिक जीवन में अनुमान का